प्रेम खुदे हुए शब्द तो नहीं

मुक्ता

प्रेम खुदे हुये शब्द तो नहीं

[कविता संग्रह]

मुक्ता

वक्तव्य

इस संग्रह का नाम है, 'प्रेम खुदे हुए शब्द तो नहीं'। पहला खंड भी प्रेम कविताओं पर ही केन्द्रित है। मैं अपना कथन प्रेम के सन्दर्भ से क्यों न शुरू करूं। प्रेम क्या कोई वायवीय धरातल है या वह शक्ति जो बरबस ही हमें यात्रा में सह भागी बना देती है। प्रेम बाह्य सम्बन्धों को लेकर नहीं वरन् उसकी अंतरंगता को लेकर निश्चित किया जाता है। यह स्थायी भाव है। प्रेरणा का जन्म इसी भाव से होता है। यह भाव बाह्य व्यवहार में उभरकर जितना आता है उससे कहीं अधिक इसके बीज अन्तर में छुपे होते हैं। वैदिक काल से ही हमारे ग्रंथ इस विषय पर लगभग मौन हैं। विवाह सम्बन्धी बहुत से शब्द विवाह संस्कार के तत्त्वों की ओर संकेत करते हैं जैसे उद्वाह (कन्या को उसके पितृग्रह से उच्चता के साथ ले जाना), विवाह (विशिष्ट ढंग से कन्या को ले जाना या अपनी स्त्री बनाने के लिए ले जाना), परिणय या परिणयन (अग्नि की प्रदक्षिणा करना), उपयम (सन्निकट ले जाना और अपना बना लेना) एवं पाणिग्रहण (कन्या का हाथ पकड़ना)। विवाह संस्कार के कर्मकांड को इन नामों में समेटा गया है। ताण्ड्य महाब्राह्मण में विवाह शब्द निम्न सन्दर्भ में आया है—

इमौ वै लोकौ सहास्तां तौ वियन्तावभूतां विवाहं
विवहावहै सह नावस्त्विति।

स्वर्ग एवं पृथ्वी में पहले एकता थी, किन्तु वे पृथक पृथक हो गए, तब उन्होंने कहा—"आओ हम लोग विवाह कर लें हम लोगों में सहयोग उत्पन्न हो जाये।"

क्या विवाह संस्कार की स्थापना के पूर्व भारतवर्ष में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में असंयम या अविविक्तता थी ? वैदिक ग्रंथों में इस विषय में कोई संकेत प्राप्त नहीं होता। ऋषि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु ने सर्वप्रथम विवाह संस्था को जन्म दिया। ऋग्वेद के मतानुसार, विवाह का उद्देश्य था गृहस्थ होकर देवों के लिए यज्ञ करना तथा सन्तानोत्पत्ति करना। प्रेम ने विवाह को भूमि अवश्य प्रदान की है किन्तु उस भूमि का स्वामित्व उसने अपने हाथों में ही रखा है। प्रेम, आचार

उत्सव या विषाद नहीं है। कोई भी बन्धन प्रेम को स्वीकार नहीं है। कुछ लोगों को प्रेम शब्द यूटोपिया जैसा लगता है। उनकी दृष्टि में 'प्यार' अधिक प्रासंगिक है। प्रेम का फलक प्यार से अधिक विस्तृत है। पहली कबिता का जन्म यूँ ही अचानक नहीं हो गया था। यह प्रेम की ऊर्जा से ही फूटी थी।

वेदांत द्वारा प्रेम की व्याख्या "एकोऽहं द्वितीयोनास्ति" के आधार पर की जा सकती है। हमारे घटक 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा' भौतिक जगत् में एक हैं। तरंग सिद्धान्त के आधार पर हम एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं जिसकी चरम परिणति संभोग है। अधूरा प्रेम व्यावहारिक जगत् में कुंठाओं को जन्म देता है। आवश्यक नहीं कि अधूरे प्रेम की दिशाएं हमेशा अन्धे गलियारों में होकर गुजरें और व्यक्ति किसी कुटैव का शिकार होकर दिशाहीन हो जाये। उर्दू शायरों ने जिस 'इश्क के दर्द' की बात कही है वह प्रेम ही था जिसने साहित्य को भी समृद्ध किया, साथ ही साथ अनगिनत दार्शनिकों और ब्रह्मज्ञानियों को भी जन्म दिया।

हम बचपन से अनजाने ही 'हीरोइज्म' की गिरफ्त में आ जाते हैं। यह आदर्श पुरुष या नारी बचपन में हमें मां-पिता, बड़े भाई, बहन, मित्र या किसी सगे-सम्बन्धी में नजर आता है। हमारी प्रकृति परिवेश के अनुसार बदलती रहती है। ज्यों ज्यों शैशव से किशोरावस्था और युवावस्था की ओर कदम बढ़ते हैं, हमारा 'आदर्श नायक' से भावुकता का एक रिश्ता भी बनता चलता है। इस नायक के बिम्ब कई व्यक्तियों से टकराते हैं और हम उनसे लगाव महसूस करते हैं। जहां यह बिम्ब, बिम्ब न रहकर कोलाज का रूप लेने लगता है वहां हम गहराई से जुड़ जाते हैं। आवश्यक नहीं कि वास्तव में वह बिम्ब जिसे हम मानसिक रूप से जीते रहे हों प्रत्यक्ष व्यक्ति में उपस्थित हो। कभी-कभी हम यह मान भी लेते हैं और इसे अपने ढंग से गढ़ने की कोशिश भी करते हैं। उम्र एवं संबोधन को यह जुड़ाव बार-बार नकारता है लेकिन सामाजिक मान्यताओं को जीने के लिए हम बाध्य हैं। प्रेम का प्राकट्य चुम्बन, आलिंगन एव शारीरिक सम्बन्धों में होना स्वाभाविक है। लेकिन जब भी हम अपराध बोध से पीड़ित होते हैं प्रेम तिरोहित हो चुका होता है, वासना का तांडव मूर्त रूप में विराजमान होता है। यही मोहभंग की स्थिति है। हीरोइज्म को यदि प्रेयस् तत्व कहा जाय तो अधिक समीचीन होगा।

प्रेम के आध्यात्मिक विश्लेषण में भी यह प्रेयस् तत्व बहुत महत्वपूर्ण है। प्रेयस् तत्व की साधना ही सर्वोपरि मानी जाती है जिसे 'मधुर भाव' साधना कहते हैं। इस भाव में स्थित रहने वाला ईश्वर से निरन्तर तादात्म्य की स्थिति में रहता है। जैसे मीरा का कृष्ण के प्रति प्रेम।

सत, रज, तम यह तीन गुण ही सृष्टि की मूल प्रकृति का आधार हैं। तमो-

गुणी अवस्था में काम सुप्तावस्था में होता है, जागरूक नहीं होता। रजोगुणी अवस्था में यह जागरूक तो होता है लेकिन इसकी प्रकृति बहिर्मुखी होती है और सतोगुणी अवस्था में यह अन्तर्मुखी होकर ऊर्ध्व की ओर प्रेरित होता है जिससे अपार ऊर्जा का विस्फोट होता है। इस ऊर्जा के पनपते ही प्रेम का सागर उमड़ने लगता है। यह खंडित होने वाला प्रेम नहीं है। इसमें मोहभंग की स्थिति भी नहीं है। आध्यात्मिक प्रेम एवं भौतिक जगत् का व्यावहारिक प्रेम, प्रेम के ऐसे टुकड़े नहीं किये जा सकते। प्रेम का विभाजन सम्भव नहीं हैं। केवल स्थितियां अलग-अलग हैं। योगी ही नहीं वरन समस्त मानव इस धारा को जीते हैं जब वे समर्पण एवं अनन्त स्पर्शों को अनुभूत होते हैं।

समय के आतंक को झेलने के लिए जो बन्दूक हमारे हाथों में है वह हमारे सीने की ओर भी मुड सकती है। ऐसे कठिन समय में सम्पूर्ण सार्थक वाङ्मय प्रेम है। विश्व विभाजन यानी आप प्रेम को नकार रहे हैं, अपने अस्तित्व को नकार रहे हैं। प्रेम का सम्मान सम्पूर्ण अर्थों में विश्व को स्वीकारना है।

दूसरा खंड 'विषम धैवत' प्रेम की भूमि के आसपास से ही उपजा है। कुछ प्रश्न भी हैं जो कतराकर निकल जाते हैं लेकिन अभिन्न मित्र की तरह कन्धों को छोड़ते भी नहीं। कुछ खंड ऐसे भी हैं जिन्हें अर्थ देने के लिए शिलाखंड में रूपांतरित होना पड़ा। लेकिन किस काल में धाराएं काली ठोस चट्टान की ओर आकर्षित नहीं हुई हैं। यह युगबोध है। हम प्रवाह से जूझते हैं लेकिन हमारे हस्ताक्षर स्पष्ट होते हैं।

पीड़ा, निराशा, अपमान, कुंठा प्रायोजित होते जा रहे रिश्तों के बीच ग्रामवधू का आभूषण वह बोरला शक्ति देता है जो पूरी आस्था के साथ छितराती भोर वैदूर्यमणि सा छप्परों के अंक में ओस बन उगता है।

ए32/3, डी. डी. ए.
एस. एफ. एस.
साकेत, नई दिल्ली-110 017

मुक्ता

अपनी बात

मैंने कब कहा भूमिका दूंगी
सूरज टूटकर झरता है
उनचास हवाएं स्वयंसार होती हैं
आदमी टुकड़े को प्रकाश कहता है
तब मारने वाले भागने की फिराक में अंधेरे ढूंढ़ते हैं
बेह्या सूरज इन सब में धंसकर बतियाता है
और बार-बार अपने को पूरा करता है
अब इसका शुरुआती बयान क्या होगा भला ?
मां की डांट
पिता का दुलार
भाई का थप्पड़
नाना-नानी की मनुहार
इन सबकी मिलीभगत में भाग लेती मैं
तब क ख ग के टेढ़े मेढ़े ककहरे में झुकी मेरी कलम
आजाद हिन्द फौज के नायक को ढूंढ़ती
और पिछले दरवाजे से छपाक उछलकर
कविता मुझसे बतियाने लगती थी
अब कहिये
'क' का अर्थ सुख है न ।
पर दो 'न' मिलकर नाक का अर्थ स्वर्ग होता है
दो न में कविता है या क में ?
जब आकाश के पूरेपन को ही तराश दिया गया हो
तब भूमिका में किस पूर्व की कौंध हो
लव-निमेष में स्कम्भ

स्कम्भ से ब्रह्म तक
स श ष ह
बस एक ही कविता पूरी हुई
अपरिपक्व को नकारने का मतलब होता
अपने को नकारना
सो दर्जा पांच की लिखी कविता
इस संग्रह में ज्यों की त्यों रख दी
विद्युत, घटपर्णी, फोटान, रसायन के प्रश्नपत्रों में
उठते विश्व दावानल
लपटें निराला की खूबसूरत लटें बन जातीं
मुझे पता भी नहीं चला और चमरौधें जूते की
शराफत ने
ड्राइंगरूम के पूरे षड्यंत्र को
ठूंठ खंडहरों का तर्जुमा बना दिया
वही थी मेरी दूसरी कविता
पेंसिलीन का घोल बड़ा तीखा होता है
उंगलियां जकड़ गयीं
बहुत से हाथों से बढ़ा एक हाथ
प्यार हूं, शीतल होंगे घोल
कोयल गाती थी
पर ध्वनि देने वाली वायु तरंग
सिक्कों की चमचमाती हथकड़ी में कैद थी
हिलते होंठ ही देखते थे लोग
आश्वस्ति ने प्रश्न दिये
मां, कविता क्यों लिखती हो ?
वटवृक्ष ने उत्तर दिया
जरूरी तो नहीं ही है यह
विश्रब्ध ध्वनि
मेरी तीसरी कविता लिखी जा चुकी थी
वटवृक्ष की जड़ों से लटके रहने में भी
आनन्द हो सकता है।
सच बोलें
झूठ बोलना आ जायगा कभी

चुनौती जब ऊंचाई ने दी हो तब टालना क्या
जज़्ब कर बैठना क्यों
यह महाभयानक रोग है चेताया था एक ने
वही जिससे मेरा नाता है
माना शुक्ल है
फूलों की झार में आकाश नहीं अंटता
परिमाण गुणों की उच्छलता का प्रेम नहीं होता
हंसती हूं तो कविता दंग हो जाती है
रोती हूं तो भागती है
सन्न हो जाने में तो मुर्दा हो आती है
अन्दर अन्दर पकती कविता
जीती है घन्टाघर से खलिहान तक
फसल उगाने वाले हाथों से, छीना-झपटी
बिकवाली में
कविता एकदम विज्ञान और संगीत की मीड़ पर
चौकन्नी हो जाती है
बहुत से खेत
बहुत से भोंपू
उनके बीच एक सड़क
बहुत से देशों ने मिलकर बनाई है
मेरी उमेदा
मेरे सोमारू तो रीत गये
अब मेरा कल्ला
रथ से तराशी तीलियाँ
जिसके धुंधुआते चूल्हे सुलगाती हैं
वासुदेव रथ ?
नहीं
कल्ला के पड़ोसी रमजान मियां का गढ़ा रथ
मुंह अंधेरे सड़क पर झाड़ बहोरता है
पिता के उपजाये धान का भात दोपहर बाद
निगलता है
हां, कलुआ नाम है उसका
मैं प्यार से कल्ला कहती हूं
और कालिदास लिखती हूं

मुद्राकोष के धूसर उड़ाती
उसकी झाड़ कविता बरसाती है
मेरी चौथी कविता यहां है
तोपों की रेज़गारी खन-खन चकाचौंध से
आइन्सटीन को बन्द नहीं कर सकती
मेरी शेष कविताएं खड़ी हैं
बिना किसी भूमिका के
पसीने को साधो
खेत के बीच
गली चौराहों के मुहाने पर
निहत्थे पैनी दृष्टि
तीखी जुबान वाले आदमी
को बरतती हुई।

क्रम

खुसरो ने कहा था	17
फलक्रम है वह रात	18
प्रेम खुदे हुये शब्द तो नहीं	20
हम उन्हें आग देंगे	21
शुभ चिह्न	22
हम स्वर्ग में होते हैं	23
बौना होता है सूरज	24
हमारे स्पर्श आगुन पंछी हैं	25
बात	26
पहला ज्वालामुखी फूटा है देह से	27
तुम्हारी परिधि	29
हमारे कुन्तल मेघ थे	31
तुम	33
कहना है	34
मुट्ठी में चुम्बन	36
जलकुम्भी नदी	38
मैं बिन्दु नहीं	40
पीला गुलाब	42
अंजुली में संधिकाल	44
मेरी शक्लें मुझे थामे हैं	45
हम प्यार करेंगे	46
आतुर क्षण	47
मैं एक बूंद	48
गवाह	50
शोध	51
पुण्य पथ की ओर	53
थेर गाथा	54
विषम धैवत	57
प्रार्थना	58

सुबह 60
पीपल का दर्द 62
भर्तृहरि की साध 64
आबू का गायक 66
नया यार्क 68
तलाकशुदा दोस्त से 70
बाहें फैलाये आकाश 72
रामगंज मंडी 74
परिक्रमा 76
अब सीता नहीं जन्मेगी 77
बनारस 79
यह आकाश तुम्हारा है 81
ओ खबर वाले ! 83
कड़ी मेहनत-जिंदाबाद 85
लिखावट 87
जीवन-पृष्ठ एक 88
व्योम संकेत 89
ओ धरती ! 90
हाशिये पर संवाद 91
लौटेंगे अग्निदूत 92
काशी करवट 94
यही मनस्काम 96
मेरा दुख 98
खिलौने उदास हैं 99
सभी बसते हैं 101
मेरी चिता 103
घना बबूल बिना कांटों का 105
राजस्थान 107
मूक यात्रा 109
मेरे सपने धार्मिक हैं 110
विशुद्ध ठाट 112
यक्ष प्रश्न 113
हव्वा की जिद 115
धुंध भरा एक दिन 117
बोरला 119

प्रेम खुदे हुये शब्द तो नहीं

कल
चंदन वन की आग में
वह पेड़ झुलस गया
तैसे लगे
भीड़ में हमारे नाम
हम सुगंध बन गये
हमारा प्रेम खुदे हुये शब्द तो नहीं
हम बिखर गये